RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-02
Issue-08
August-2017
ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com

हिन्द महासागर में लघु भारत मॉरीशस की सांस्कृतिक परंपरा

डॉ० अनिल कुमार सिंह

अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, सोनू भाऊ बसवंत कॉलेज, शहापुर, मुंबई (महाराष्ट्र)

दुनिया के सुंदरतम देशों में मॉरीशस की गिनती होती है। यहाँ की वादियां ऐसी हैं, जहां बार-बार जाने की इच्छा होती है। कदम-कदम पर इसकी प्राकृतिक खूबसूरती आकर्षित करती है। न भूलनेवाली प्राकृतिक सुंदरता को देखकर ही अपनी मॉरीशस यात्रा के दौरान प्रख्यात पत्रकार मार्क ट्वेन ने कहा था कि 'ईश्वर ने पहले मॉरीशस का निर्माण किया फिर उसी की अनुकृति पर स्वर्ग बनाया।' यह संयोग है कि मॉरीशस की मेरी यात्रा तीन बार हुई। पहली यात्रा वर्ष 2015 में तब हुई जब 05 जनवरी 2015 की आधी रात में एयर मॉरीशस मुम्बई के अंतरराष्ट्रीय हवाई-पत्तन से उड़ा और लगभग पांच घंटे की उड़ान के बाद अगले सुबह मॉरीशस के पोर्ट लुई स्थित अंतरराष्ट्रीय हवाई-पत्तन पर उतरा तो सुबह हो चुकी थी और प्राची में सूरज उग आया था जो रह-रहकर बादलों की ओट में जाकर हमारे संग लुका-छिपी खेल रहा था। पोर्ट लुई मॉरीशस की राजधानी ही नहीं प्रमुख शहर और बंदरगाह भी है। पोर्ट लुई इंटरनेशनल एयरपोर्ट से हम क्वात्रे बोर्न्स आये, जहां होटल गोल्ड क्रेस्ट में हमारा ठहराव था।

हिन्द महासागर के गर्भ में बसा मॉरीशस दक्षिण-पूर्व अफ्रीकी महादेश का एक छोटा-सा द्वीपीय देश है, जो प्रकृति की रंग-बिरंगी दृश्यों को समेटे अपने चतुर्दिक समुद्र तटों को छूता हुआ पर्यटकों को खूब लुभाता है। मीलों तक चाय-बागान, अनानास और गन्ने के खेत पर्यटकों को केवल लुभाते ही नहीं प्रत्युत् कुछ असाधारण अनुभवों से रू-बरू भी कराते हैं। लहलहाते खेतों, आड़ी तिरछी सड़कों या सीधी-सपाट पथों पर चलते हुए आप अपने चुने हुए गंतव्य पर कब पहुंच जाते हैं, पता नहीं चलता। ऐसा मेरे और मेरे सहयात्रियों के साथ कई बार हुआ। उस दिन क्वात्रे बोर्न्स स्थित होटल गोल्ड क्रेस्ट से जब हमने नगर-भ्रमण की शुरुआत की तो पलक झपकते ही हम ला-सीटा डेल फोर्ट पहुँच गए जिसके टैरिस से धुंध भरे मौसम में कभी-कभार आती-जाती सूर्य-किरणों के बीच से दूर तक मॉरीशस को देखना हमें अच्छा लगा। ला-सीटा डेल फोर्ट के उपरांत हम अप्रवासी घाट गए। अप्रवासी घाट मॉरीशस का सर्वाधिक पावन और लोकप्रिय पर्यटन स्थल है। मॉरीशसीय मित्र श्री यंतुदेव बुधु और श्री शंभु धनराज ने बताया था कि अप्रवासी घाट अपने आरंभिक दिनों में 'कुली घाट' के नाम से जाना जाता था। मॉरीशस की स्वतंत्रता के बाद वर्ष 1987 में इसका नामांतरण अप्रवासी घाट किया गया। यहां उपलब्ध दस्तावेजों से ज्ञात हुआ कि अंग्रेजीराज में एक एकरारनामे के तहत भारत से लाये गए कुलियों या मजदूरों को समय के अंतराल में 'गिरमिटिया' कहा गया। आज 'गिरमिटिया' शब्द मॉरीशसवासियों के लिए केवल शब्द मात्र नहीं है बल्कि एक प्रतीक है उस दर्द और असह्य यातना की, जिसे अंग्रेजों ने उनकी गुलामी के दिनों में दिया था। गिरमिटियों की याद में अप्रवासी घाट पर प्रथम गिरमिटिया की एक आदमकद प्रतिमा है, जो आनेवाले हर आगंतुक से यह कह रहा है कि मैं इस विदेशी धरती पर आज भी पीछे छूट गए अपनों की खैरियत में खड़ा हूँ, जिनका पेट भरने की खातिर उन्हें छोड़कर धन कमाने की लालसा में वे यहां आये थे और दुर्भाग्यवश यहीं रह गये, लौट नहीं सके। कहते हैं 02 नवम्बर 1834 को कोलकाता से आये समुद्री जहाज से 36 भारतीय मजदूर पहली खेप में आये थे और यह सिलसिला 1917 तक चलता रहा था, जिसमें लगभग साढ़े चार लाख मजदूर भारत के विभिन्न क्षेत्रों यथा-बिहार, उत्तर प्रदेश और कुछ दक्षिण-पश्चिम के राज्यों से आये थे जिनकी वापसी नहीं हुई और मजबूरी में वे यहीं रच-बस गए। इस गिरमिट प्रथा की शुरुआत ब्रिटेन की उपनिवेशवादी दृष्टि के साथ हुई थी। ब्रिटेन में जब औद्योगिक क्रांति हुई तो उन्हें सस्ते, मेहनती और ईमानदार मजदूरों की जरुरत महसूस हुई। इस जरुरत की पूर्ति के लिए पहली नजर में उनका ध्यान उन भारतीय मजदूरों की ओर गया जो परिश्रमी, ईमानदार और सस्ते थे। ये गिरमिट मजदूर जीवट और साहसी थे। विपरीत परिस्थितियों में भी उन्होंने अपना हौसला कभी नहीं खोया और जिंदा रहे। मॉरीशस में गिरमिटिया मजदूरों से संबंधित सूची और संख्या अभिलेखों में दर्ज है। अभिलेखों में दर्ज सूचियों को देखने का भी सुयोग हमें मोका स्थित महात्मा गांधी संस्थान के इंडियन माइग्रेशन म्यूजियम के कार्यालय में मिला। इन अभिलेखों में दर्ज है कि संबद्ध लाखों गिरमिट-मजदूर भारत के किस क्षेत्र या राज्य, जिला या तहसील से आये थे। आज उनके वंशज मॉरीशस के शासक हैं, और अपने श्रम से इस लघु देश को समृद्ध कर रहे हैं। म्यूजियम में कार्यरत श्री सूर्यनारायण जी ने बड़ी सावधानी पूर्वक हमें वह रजिस्टर (पंजी) भी दिखाया, जो अब दयनीय स्थिति में है। अब यह कुली घाट सह अप्रवासी घाट मॉरीशस की अनमोल धरोहर तो है ही, 2006 से यूनेस्को की विश्व विरासत सूची में भी शामिल है। अप्रवासी घाट में स्मृति के तौर पर उस दौर की झोपड़ियां खाने-पीने के सामान, बैलगाड़ी, लोहे के यंत्र आदि प्रतीक के तौर पर रखे गए हैं। अप्रवासी घाट से गुजरते हुए मन मौन हो जाता है और भारतीय कुलियों के यातना भरे दिनों के स्मरण मात्र से आंखों में आंसू भर आते हैं।

अप्रवासी घाट से आंखों में आँसू भरे हुए हम सब मॉरीशस के महत्वपूर्ण पर्यटन स्थलों में घूमते हुए गंगा तालाब पहुंचे। गंगा तालाब मॉरीशस के पवित्रतम स्थलों में से एक है। यहां शिव से लेकर

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

विष्णु, राम, कृष्ण, हनुमान, लक्ष्मी, पार्वती आदि देवी-देवता उपस्थित हैं। भगवान शिव की विशाल मूर्ति पास ही है। भारत में जो महत्व गंगा का है, वही महत्व यहां गंगा तालाब का है। स्थानीय लोगों ने बताया कि प्रत्येक वर्ष महाशिवरात्रि के दिन लोग अपने घरों से नंगे पांव गंगा तालाब तक पैदल कांवड़-यात्रा करते हैं और जल लेकर अपने गांव में लौटकर वहां के शिव मंदिरों में जलाभिषेक करते हैं। यह संयोग है कि जिस समय हम गंगा तालाब पहुँचे मौसम ने करवट ले ली थी। हवा में कनकनाहट आ गई थी और हल्की बयार ने चतुर्दिक कोहरे की चादर बिछा रखी थी। पूरा तालाब कोहरे से आच्छादित था। ऐसे पावन तीर्थ-स्थल के निकट स्वयं को पाकर हमें एक सुखद अनुभूति हो रही थी और अपने देश की पतित-पावनी गंगा का स्मरण हो रहा था।

तीसरे दिन हमारा अकादमिक कार्यक्रम महात्मा गांधी संस्थान, मोका के सभागार में हुआ। संस्थान की प्राध्यापिका डॉ० अलका धनपत के संयोजकत्व में अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी संपन्न हुई। सुश्री अलका धनपत तथा हिन्दी कवि-लेखक श्री हेमराज सुंदर और डॉ० के० के० झा के साथ-साथ रूस की हिन्दी विदुषी डॉ० ल्यूद्मिला खखलोवा की साझेदारी से अकादमिक कार्यक्रम को विशेष प्रतिष्ठा मिली। मॉरीशस में महात्मा गांधी संस्थान मॉरीशस विश्वविद्यालय की एक अनुषंगी इकाई है और उच्चत्तर शिक्षा का एक महत्वपूर्ण केन्द्र भी। इस संस्थान के द्वारा भारतीय संस्कृति और भाषा को गति देने व शैक्षिक-साहित्यिक जागरूकता बढ़ाने का महत्वपूर्ण कार्य किया जाता है। भारतीय भाषाओं यथा- हिन्दी, तमिल, तेलुगु, मराठी और उर्दू सहित कला और संस्कृति के विकास के साथ-साथ मॉरीशसीय साहित्य, कला और संस्कृति के विकास पर भी यहां विशेष ध्यान दिया जाता है। इस संस्थान के अतिरिक्त हमारा अंतरराष्ट्रीय अकादमिक कार्यक्रम हिन्दी प्रचारिणी सभा, लौंग माउन्टेन के सभागार में भी हुआ। मॉरीशस में हिन्दी के प्रचार-प्रसार में सभा की महती भूमिका है। सभा के अध्यक्ष श्री यंतुदेव बुधु और कोषाध्यक्ष श्री टहल रामदीन हैं। उन्होंने बताया कि हिन्दी प्रचारिणी सभा एक शैक्षिक, सांस्कृतिक और सामाजिक संस्था है। मॉरीशस में हिन्दी के विकास के लिए सभा 'पंकज' नामक पत्रिका भी प्रकाशित करती है। प्रत्रिका के कवर-पृष्ठ पर ही उसका ध्येय वाक्य 'भाषा गई तो संस्कृति गई' लिखा हुआ है। सभा की स्थापना 1925 में हुई थी, तबसे आजतक यह अपने मिशन की सफलता के लिए सतत् प्रयासरत है।

मॉरीशस की जलवायु उष्णकटिबंधीय है। यहां मई से नवम्बर तक शीत ऋतु रहती है और नवम्बर से मई तक का मौसम गर्म होता है। इसी बीच बारिश भी होती है और चक्रवातों का भी आना-जाना लगा रहता है। इस देश का तापमान न्यूनतम 120 सेल्सियस और अधिकतम 300 सेल्सियस तक स्थिर रहता है। जिन दिनों हम मॉरीशस में थे दूसरे-तीसरे स्तर का चक्रवात आ गया था। अचानक आये समुद्री साइक्लोन से हम अचंभित थे। पूरा द्वीप कोहरों से ढंक गया था और लगातार तीन दिनों तक बूँदा-बाँदी और बारिश होती रही थी। हमारा कहीं आना-जाना एक तरह से रुक गया था। चक्रवात का असर जब कम हुआ तो हम घूमने के लिए निकले। इसी दरम्यान समुद्र तट के साथ-साथ आधुनिक मॉरीशस के जनक और पूर्व प्रधानमंत्री सर शिवसागर रामगुलाम की समाधि स्थल सह बॉटनिकल गार्डेन पहुंचे। इस गार्डेन की कई खूबियां हैं। यहां रंग-बिरंगे फूल-पादप, आम के पेड़ और किस्म-किस्म के पेड़ हैं, जिसमें एक ताम्र का पेड़ विरासत की तरह है। किंवदंती है कि यह साठ वर्ष के अंतराल पर खिलता है। यों, भी यहां ताम्र वृक्षों की बहुतायत है। उद्यान के साफ-सुथरे मार्ग और अच्छी व्यवस्था पर्यटकों को आनंद भरे पल देने के लिए काफी है।

10 जनवरी को विश्व हिन्दी दिवस था। इस दिन पूरी दुनिया में हिन्दी-प्रेमी बड़े धूम-धाम से विश्व हिन्दी दिवस मनाते हैं। मॉरीशस में तो यह पर्व की तरह मनाया जाता है। विश्व में यह अकेला देश है, जहां विश्व हिन्दी सचिवालय है। इस सचिवालय की संकल्पना वर्ष 1975 में नागपुर में आयोजित प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन के समय भारत और मॉरीशस के प्रधानमंत्रियों क्रमशः श्रीमती इंदिरा गांधी और श्री शिवसागर रामगुलाम की आपसी सलाह से हुई थी। सचिवालय का मुख्य कार्य एवं उद्देश्य विश्व स्तर पर हिन्दी का प्रचार-प्रसार और अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में हिन्दी को स्थापित करना है। हिन्दी संयुक्त राष्ट्र की भाषा बने इसके लिए वैश्विक मंच तैयार करने का दायित्व भी सचिवालय पर है। उल्लेख्य है कि मॉरीशस में हिन्दी का इतिहास डेढ़ सौ वर्षों से भी अधिक पुराना है। भोजपुरी ने इसमें बड़ी भूमिका अदा की है। बैठकाओं-चौपालों में रामायण पाठ से लेकर लोकधुन में मानस की पंक्तियों को गाते हुए खेतों-खलिहानों में किसानों द्वारा यह भाषा अपने बल पर इतने दिनों तक जीवित रही। आज यह मॉरीशस की जनभाषा है और शिक्षा, साहित्य तथा जनमाध्यम में इसका मुख्य स्थान है। विश्व हिन्दी दिवस (10 जनवरी) के दिन सचिवालय में व्यापक कार्यक्रम था। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता राष्ट्रपति महामहिम श्री राजकेश्वर प्रयाग थे और मुख्य अतिथि रूस की हिन्दी विदुषी ल्यूद्मिला खखलोवा थीं। अनेक मंचीय और साहित्यिक कार्यक्रम हुए। इन कार्यक्रमों के हम भी हिस्सा थे। अपने संबोधन भाषण में राष्ट्रपति श्री प्रयाग ने कहा था कि 'हिन्दी मॉरीशस को नींद से जगानेवाली भाषा है। यह भाषा हमारी संस्कृति और हमारे इतिहास के साथ-साथ हमारे भविष्य से भी जुड़ी हुई है। हर दुःख और संकट के क्षणों में हिन्दी ने रक्षा कवच बनकर हमारी सहायता की है। हिन्दी के हम आभारी हैं और आशा करते हैं कि जल्द ही यह विश्वभाषा बनेगी और दुनिया पर राज करेगी।'

1968 में अपनी आजादी के बाद से ही मॉरीशस निरंतर प्रगति-पथ पर है। गरीबी से मुक्ति मिली है और समृद्धि ने साथ दिया है। 1992 में गणतंत्र की घोषणा हुई और आज यह लोकतंत्र के मामले में दुनिया में एक उदाहरण है। समुद्र के गर्भ में बसा होने के कारण इसके हर कोने में समुद्र है। इसका पूर्वी समुद्र-तट सफेद बालू और नीले रंग के पानी को लेकर बेहद खास है तो पश्चिमी तट अपनी सुंदरता के लिए मशहूर है। रोमांच व रोमांस के प्रेमी जोड़ों के लिए यह स्थान किसी जन्नत से कम नहीं है। उत्तर का क्षेत्र मैदानी भाग है, जहां चाय-कहवा,

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

अनानास और गन्ने की खेती होती है। दक्षिणी क्षेत्र में समुद्र की उछाल लेती लहरों को देखकर आँख मूँद कर कहा जा सकता है कि यहां का समुद्र अशांत है। जहां तक मौसम का सवाल है न बहुत अधिक गर्मी पड़ती है और न ही बहुत अधिक सर्दी। लघु द्वीप होने के बावजूद चक्रवात के दिनों को छोड़कर एक क्षेत्र में बारिश तो दूसरे क्षेत्र में गुनगुने धूप की उपस्थिति हो सकती है। चक्रवात के दिनों में तेज हवाओं के साथ भारी बारिश होती है। कई स्थान ऐसे भी हैं जहां खूबसूरत पहाड़ियों के बीच परियों और लोक-गीत गाते व नृत्य करते मिथकीय पात्रों को देखने की चर्चा लोग अक्सर करते हैं। त्रिओले स्थित यशस्वी हिन्दी रचनाकार श्री अभिमन्यु अनत के आवास से क्वात्रे बोर्न्स लौटते हुए श्री टहल रामदीन जी ने मुड़िया पहाड़ को दिखाते हुए कुछ ऐसे ही लोक प्रचलित मिथकों की चर्चा की थी।

अंत में कहना चाहूंगा कि मॉरीशस की खास विशेषता उसकी विविधता में हैं। यह विविधता ही मॉरीशस की संस्कृति की खास विशेषता है। धर्म-संस्कृति, भाषा-शैली, रीति-रिवाज, रहन-सहन सब में विविधता है। गोरे-सांवले, लंबे-छोटे सभी रंग और नस्ल के लोग यहां है। इसका कारण यह है कि मॉरीशस में रहनेवाले भारतीय मूलवंशियों के साथ-साथ अंग्रेज, डच, फ्रेंच और क्रियोल सबकी अपनी-अपनी संस्कृति और भूमिका है। मीलों तक खड़े चाय, अनानास और गन्ने के पौधे पर्यटकों को केवल लुभाते ही नहीं बल्कि कुछ असाधारण अनुभवों से रू-बरू भी कराते हैं। मॉरीशस की ये खास विशेषताएँ ही पर्यटकों को अपनी ओर खींच लाती है।

संदर्भ :

1. प्रह्लाद रामशरण, मॉरीशस की लोक कथाएँ
2. वैश्विक्ता के संदर्भ में हिन्दी –डॉ. शैलजा पाटिल
3. विश्व में हिन्दी –हरीबाबू कंसल
4. गगनञ्चल गगनांचल,(जुलाई-अक्टूबर,2015
5. हिन्दी सब संसार –सं ऋतुपर्ण सुरेश

© RRIJM 2015, All Rights Reserved